राज्यपाल सचिवालय
राजभवन, जयपुर

राजभवन में हनुमंत चरित्र कथा–दूसरा दिन

जिसे प्यास लगेगी, वही पानी खोजेगा

जयपुर, 19 अक्टूबर। राज्यपाल श्री कलराज मिश्र की पहल पर राजभवन में श्री हनुमंत चरित्र कथा हो रही है। शनिवार को दूसरे दिन कथा वाचक श्री अनुराग पाठक ने बताया कि हनुमान जी ने लंका में जाकर भेद नीति अपनाई। इससे रावण और विभिषण के मध्य संदेह पैदा हो गया। जहां संदेह हो जाता है, वहां पतन निश्चित होता है। यह संदेह ही रावण के पतन का कारण बना।

हनुमान का चारों युगों में प्रताप है। वे भगवान राम के चलते–फिरते धाम है। उनमें अभिमान नहीं है। श्री हनुमान जी की चार परिक्रमा करने से ही चारों धामों के फल की प्राप्ति हो जाती है। कथावाचक ने बताया कि जीवन में निरन्तरता होती है। हमारा जीवन श्ंवासों की निरन्तरता है। सदकार्य में आतुरता का होना आवश्यक है। आतुरता रखने वाला व्यक्ति ही लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। जिसको प्यास लगेगी, वही पानी खोजेगा।

गोस्वामी तुलसीदास ने श्री हनुमान के नामों को सुन्दरता के साथ पिरोया है। श्री हनुमान रामदूत, पवनपुत्र है। वे राम के वाहन है और हनुमान जी का वाहन वायु है। श्री हनुमान ने निःस्वार्थ भाव से श्रीराम की सेवा की। उन्होंने कभी कोई आकांक्षा नहीं रखी।

राजभवन में दूसरे दिन हनुमन्त चरित्र कथा का श्रवण राज्य की प्रथम महिला श्रीमती सत्यवती मिश्रा, राज्य सभा सांसद श्री सुधांशु त्रिवेदी, श्री चन्द्रशेखर, श्रीमती ज्योति किरण सहित अनेक गणमान्य नागरिकों ने श्रवण किया।

इस अवसर पर संगीतमय संकीर्तन में की–बोर्ड पर श्री सचिन ब्रजवासी, हारमोनियम पर श्री प्रशांत पाठक, ढोलक पर श्री सौरभ कौशिक और इलेक्ट्रिक पैड पर श्री मनोज शर्मा ने भागीदारी निभाई।

कथा के समापन पर श्री हनुमान जी की आरती की गई।

———

डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा
सहायक निदेशक (जनसम्पर्क)
राज्यपाल, राजस्थान